

आज का पुरुषार्थ 3 April 2022

Source: BK Suraj bhai

Website: www.shivbabas.org

धारणा – " आज स्वयं को स्वमानों से भरे और अपने संकल्पों को पावरफूल बनाने का पुरुषार्थ करे "

हम कितने **भाग्यवान** है कि स्वयं **भगवान** हमें ईश्वरीय पढ़ाई पढ़ा रहे है। एक सुन्दर विद्या हमें प्रदान कर रहे है। जो राजयोग उन्होंने कल्प पहले सिखाया था वही पुनः सिखा रहे है।

ऐसी पढ़ाई संसार और कोई होती ही नहीं। हम महान युनिवर्सिटी के विद्यार्थी और महान **सुप्रीम टीचर के स्टूडेंट** है। ऐसी पढ़ाई जिससे हमें डबल सिरताज राजाई प्राप्त होती है।

ज़रा सोचे, ऐसी पढ़ाई पढ़ने के लिए हम कितना ध्यान दे रहे है? क्या ऐसी पढ़ाई पर हमारा सम्पूर्ण **अटेन्शन** है? या हमारे पास पढ़ने के लिए समय ही नहीं है? क्या है हमारी **स्थिति**?

हमारे पास और चीजों के लिए समय है। टीवी देखने के लिए समय है, ईधर-उधर की किताबें, पत्र-पत्रिकाएं पढ़ने के लिए बहुत समय है।

परन्तु भगवान की पढ़ाई पढ़ने के लिए हमारे पास समय ही नहीं है? तो ...

" जो पढ़ाई हमें **ज्ञान का बल** देती है, जो पढ़ाई हमें **दिव्य बुद्धि** प्रदान करती है, जो पढ़ाई हमें **समस्याओं का समाधान देती है**, जिस पढ़ाई से हम सदा सदा के लिए ज्ञान धन से भरपूर हो जाते हैं, हमारी सत्य की खोज पूर्ण हो जाती है "

... उस पढ़ाई पर हमें पूरा ध्यान देना चाहिए।

हमें तो अपनी वृत्ति से इस सम्पूर्ण विश्व को परिवर्तन करना है। हमारी वृत्ति दो विशेष रूप से सदा रहे

" मैं विश्वकल्याणकारी हूँ "

सब आत्माओं को देखो

" मुझे इन सबका कल्याण करना है "

अपने आस-पास, आपके मित्र-सम्बन्धी, साथ में काम करने वाले फ्रेंड्स सबको देखकर संकल्प करे

" मुझे इन सबका कल्याण करना है .. मुझे इन सबको मुक्ति जीवनमुक्ति की राह दिखानी है .. मैं तो विश्वकल्याणकारी हूँ "

दुसरा

" मैं तो पवित्रता का फरिश्ता हूँ .. प्रकृति का मालिक हूँ "

यह वृत्ति रहे ...

" मैं तो परम पवित्र हूँ .. जहाँ जहाँ मेरी दृष्टि जायेगी .. वहाँ वहाँ सभी आत्मायें पवित्र बनती जायेंगी "

बहुत सुन्दर बात है

हमारी पवित्रता से संसार की अनेक आत्मायें और यह सम्पूर्ण प्रकृति दोनों ही पावन बनती रहती है। हमारी यह वृत्ति भी विश्वकल्याण का क्या करती रहेगी।

संकल्प करे ...

" जहाँ जहाँ हमारे कदम पड़े .. यह वसुंधरा पावन बनती जायेगी "

" जहाँ जहाँ हमारे हाथ स्पर्श होंगे .. वह वस्तुएं पावन बनती जायेंगी "

" हमारे पवित्र संकल्प चारों ओर के वायुमंडल को पवित्र करते जायेंगे "

हमारे फरिश्ता स्वरूप की स्थिति ...

" मैं पवित्रता का फरिश्ता हूँ "

इससे सारा वायुमंडल बदलेगा और विश्व की आत्माओं को संदेश मिलेगा।

दुसरा

हमारे श्रेष्ठ कर्म सारी दुनिया को श्रेष्ठाचारी बनायेगी। तो हमें अपने कर्मों पर भी बहुत ध्यान देना है। अब हमें वे कर्म नहीं करने हैं, जो कर्म संसार के लोगों कर रहे हैं।

हम संसार से अलग हैं। उनसे महान हैं। उनके लिए आदर्श हैं। चमकते हुए ज्ञानसूर्य हैं।

तो आज इस स्वमान का अभ्यास करेंगे

" मैं पवित्रता का फरिश्ता हूँ .. और मास्टर ज्ञान सूर्य हूँ .. मुझसे चारों ओर प्रकाश फैल रहा है .. इससे विश्व का कल्याण हो रहा है "

और ड्रिल करेंगे के

" हम सूक्ष्म लोक में है .. सामने है बापदादा "

बापदादा को देखेंगे ...

" बहुत तेजस्वी स्वरूप .. बापदादा के अंग अंग से बबहुत तेजस्वी गोल्डेन किरणें फैल रही है .. और मस्तक में ज्ञान सूर्य शिवबाबा चमक रहे है "

और शिवबाबा ...

" अपने हजार भुजाओं की छत्रछाया मेरे सिर के ऊपर फैला दी है .. हजार भुजाएं मेरे सिर के ऊपर है "

बहुत गुड फीलिंग करेंगे। हर घन्टे में एकबार और स्वयं को शक्तिशाली बनायेंगे।

॥ ओम शान्ति ॥

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org